Date - 15/02/2025
Time - 10. AM

डॉ मनोज कुमार सिंह

मनोविज्ञान विभाग

महाराजा कॉलेज आरा

P.G - 2nd Semester
Paper - CC - 7
Psychopathology

Topic :-

असामान्य व्यवहार के मॉडल

(Models of Abnormal Behaviour)

परिचय *(Introduction):*

यदि असामान्य व्यवहार की व्याख्यात्मक उपागमों (Explanatory approaches) पर ध्यान दें तो यह स्पष्ट होगा कि विभिन्न उपागमों या मॉडल में हमेशा एक प्रतियोगिता (competition) रहा है। असामान्यता के मॉडल से तात्पर्य एक ऐसे विस्तृत लेखा-जोखा से होता है जो यह बतलाता है कि किस तरह से तथा क्यों असामान्य व्यवहार विकसित होता है। यहाँ शोधकर्ताओं को एक ऐसा सप्रत्यात्मक नक्शा (Conceptual map) सामने उपस्थित किया जाता है जिसके आधार पर वे यह निर्णय ले पाते हैं कि असामान्य व्यवहार का कौन पहलू अर्थात् स्पष्ट व्यवहार(Overt behaviour) या उससे सम्बंधित चिन्तन (Thought) और कौन विधि यानि, औषध (Drugs), वातचीत (Talking) तथा झाड़-फूंक (Exorcism) असामान्य व्यवहार की व्याख्या एवं उपचार के लिये सर्वाधिक उपयोगी है। असमान्य व्यवहार की व्याख्या करने के लिए भिन्न-भिन्न तरह के मॉडल का प्रतिपादन समय समय पर किया जाता रहा है और इन मॉडलों की लोकप्रियता समय-समय पर उठती गिरती रही है। जैसे, आजकल असामान्य व्यवहार का अधिदैविक मॉडल (Supernatural model) की लोकप्रियता लगभग समाप्त हो गयी है और जैविक मांडल (Biological Model), मनोसमाजिक मॉडल (Psychsocial model), सामाजिक-सांस्कृतिक मॉडल (Socio-cultural model) तथा डायथिसिस प्रतिबल मॉडल (Diathesis stress model) आदि की लोकप्रियता काफी बढ़ गयी है।

असामान्य व्यवहार के मॉडल का वैज्ञानिक अर्थ (Scientific Meaning of Models of Abnormal Behaviour):

असामान्य व्यवहार के क्या लक्षण (Symptoms) होते हैं? असामान्य व्यवहार क्यों होते हैं? तथा इसका उपचार (Treatment) कैसे किया जाय? आदि असामान्य एवं नैदानिक मनोविज्ञान के मौलिक प्रश्न हैं। इन सभी प्रश्नों का उत्तर कई तरह के उपागमों (Opproaches), सिद्धान्तों (Theories) अथवा मॉडलों के तहत देने का प्रयास किया

गया है। इस तरह से कहा जा सकता है कि असामान्य व्यवहार के नैदानिक स्वरूप (Clinical Picture) अर्थात् लक्षण, कारण तथा उपचार का एक विशेष ढंग से व्याख्या करना ही मॉडल कहलाता है। स्पष्ट हुआ कि असामान्य मनोविज्ञान में मॉडल से तात्पर्य एक ऐसे ढाँचा से होता है जिसमें यह वर्णन होता है कि कोई भी व्यवहार किस तरह से विकसित होता है और किस तरह से समस्यात्मक (Problematic) हो जाता है। साथ ही साथ ऐसे समस्यात्मक व्यवहार के मूल्यांकन, उपचार, एवं शोध शैलियों से सम्बंधित तथ्यों का भी उल्लेख रहता है। असामान्य व्यवहार की व्याख्या के लिए जो मॉडल प्रतिपादित किए गये है उन सबका अपना अपना महत्व है। इनके महत्व के चार सामान्य कारण हे जो निम्नांकित है :

(i) कई भी मॉडल मनोवैज्ञानिकों के चिंतनों का संगठित करने में मदद करता है।

(ii) यह नैदानिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा लिए गये निर्णयों तथा हस्ताक्षेपों **(Interventions)** को निर्देशित करता है।

(iii) यह मनोवैज्ञानिकों को अपने सहकर्मियों के साथ एक सामान्य एवं क्रमबद्ध भाषा संचार **(Communication)** करने में मदद करता है।

(iv) मॉडल उन सभी तरह के सामग्रियों जो ऊपर से असम्बंधित दिखते हैं, को एक सूत्र में बाँधने का कार्य करता है।

स्पष्ट है कि असामान्य मनोविज्ञान के मॉडलों से लाभ होता है। फिर भी इसकी कुछ परिसीमाएँ (Limitations) भी हैं। जैसे किसी विशेष मॉडल के द्वारा असामान्य व्यवहार की व्याख्या करते समय मनोवैज्ञानिकों के विचार या चिंतन में दृढ़ता (Rigidity) आ जाती है, परिणामतः वे किसी भी नया एवं महत्वपूर्ण विचार को स्वीकार करने से इनकार कर देते हैं। ऐसी स्थिति में उनके द्वारा मानव व्यवहार की गयी व्याख्या, मूल्यांकन एवं शोध बहुत अर्थपूर्ण नहीं रह जाता है। इस तरह इनके अध्ययन में वस्तुनिष्ठता (Objectivity) की जगह आत्मनिष्ठता (Subjectivity) का समावेश हो जाता है। असामान्यता की व्याख्या करने के लिए कई तरह के मॉडलों का प्रतिपादन किया गया है जिन्हें मूल रूप से निम्न तीन भागों में बाँटा जाता है-

(क) जैविक सिद्धान्त या मॉडल **(Biological theory or model)**

(ख) मनोसामाजिक सिद्धान्त या मॉडल **(Psychosocial theory or model)**

(ग) सामाजिक सांस्कृतिक सिद्धान्त या मॉडल **(Sociocultural theory or model)**

जैविक सिद्धान्त या मॉडल को मेडिकल मॉडल (Medical model) भी कहा जाता है। यहाँ असामान्य व्यवहार की व्याख्या जैव-दैहिक प्रक्रियाओं (Bio-physical processes) के आधार पर की गयी है।मनोसामाजिक मॉडल असामान्य व्यवहार की व्याख्या व्यक्ति के जिंदगी की आरंभिक अनुभूतियाँ (Early experiences) तथा जिन्दगी के सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के प्रभांवों के रूप में की गयी है। इसके तहत कई तरह के विचारधाराएँ आती हैं।

सामाजिक-सांस्कृतिक मॉडल असामान्य व्यवहार की व्याख्या व्यक्ति पर सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण के पड़नेवाले प्रभावों के रूप में किया गया है। ऐसे कारकों में गरीबी (Proverty), विभेद (Discrimination), अशिक्षा आदि का नाम मुख्य रूप से लिया जाता है।

असामान्य व्यवहार का मनोगतिकी मॉडल ***(Psychodynamic Model of Abnormal Behaviour):***

असामान्य व्यवहार के कारणों, लक्षणों, तथा उसके उपचार की व्याख्या कई तरह के उपागमों (Approaches), सिद्धान्तों अथवा मॉडलों के तहत की गयी है। इन सभी मॉडलों को तीन प्रमुख भागों में बाँटा गया है। ये तीन मॉडल निम्नवत हैं।

(क) जैविक सिद्धान्त या मॉडल ***(Biological theory or model)***

(ख***)*** मनोसामाजिक सिद्धान्त या मॉडल ***(Psychosocial theory or model)***

(ग***)*** सामाजिक**-**सांस्कृतिक सिद्धान्त या मॉडल ***(Socio-cultural theory or model)***

पाठ्यक्रमानुसार यहाँ जैविक मॉडल तथा सामाजिक संस्कृतिक मॉडल की चर्चा अनावश्यक है। जहाँ तक मनोसामाजिक मॉडल का प्रश्न है, इसके अंतर्गत आने वाले मनोगत्यात्मक मॉडल की चर्चा इस अनुच्छेद में तथा मानवतावादी- अस्तित्ववादी मॉडल की व्याख्या अगले अनुच्छेदों में की जाएगी।

मनोगतिकी मॉडल या सिद्धान्त (Psychodynamic theory or model) को मनोसामाजिक सिद्धान्त के अन्तर्गत रखा गया है। इस मॉडल के तहत असामान्य व्यवहार (Abnormal behaviour) की व्याख्या व्यक्ति के जिन्दगी की आरम्भिक अनुभूतियाँ (Early experiences) तथा जिन्दगी के सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के प्रभावों के रूप में की गयी है। शायद यही कारण है कि इसे मनोसामाजिक सिद्धान्त या मॉडल के नाम से पुकारा जाता है।

मनोगतिकी मॉडल का प्रतिपादन मूल रूप से सिगमंड फ्रायड (Sigmund Fruid) द्वारा किया गया है। हालांकि बाद में कई मनोवैज्ञानिकों ने इसे अपने प्रयास द्वारा संशोधित किया है। असामान्यता के सम्बंध में फ्रायड के मौलिक विचारधारा को मनोविश्लेषणात्मक विचारधारा (Psychoanalytic viewpoints) तथा इनके संशोधित विचारधारा को मनोगतिकी विचारधारा (Psychodynamic viewpoint) कहा जाता है। फ्रायड ने करीब 50 वर्ष तक मानसिक रोगियों के किए गये प्रेक्षण तथा उपचार के अनुभवों के आधार पर असामान्य व्यवहार की व्याख्या अचेतन के आन्तरिक गतिकी (Inner dynamics) के रूप में किया है। इस सिद्धान्त की मान्यता है कि व्यक्ति की इच्छा तथा समाज की प्रत्याशाओं के बीच उत्पन्न मानसिक संघर्ष से प्रतिबल उत्पन्न होता है जो आगे चलकर व्यक्ति में असामान्यता को जन्म देता है। इनका यह भी मानना है कि आरंभिक बाल्यावस्था में बच्चा द्वारा मानसिक संघर्षों या द्वन्द्वों के समाधान की विधि का सार्थक प्रभाव असामान्य व्यवहार पर पड़ता है।

मनोगतिकी विचारधारा की अभिव्यक्ति निम्नलिखित भागों में बाँटकर उत्तम ढंग से की जा सकती है-

(**1)** क्लासिकी मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त **(Classical Psychoanalytic theory)**

(2) नया मनोगतिकी संदर्भ **(Newer Psychodynamic perspectives)**

(3) मनोगतिकी सिद्धान्त का प्रभाव **(Impact of Psychodynamic theory)**

(***1)*** क्लासिकी मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त ***(Classical Psychoanlytic thoery)***

फ्रायड द्वारा प्रतिपादित मौलिक विचारधारा को क्लासिकी मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त कहा जाता है। रोगियों के प्रेक्षण (Observation) तथा उपचार के अपने गहन अध्ययन के आधार पर फ्रायड ने कहा कि रोगों का अधिक के प्रेक्षण (महत्वपूर्ण मानसिक प्रक्रियाएँ चेतन (Conscious) में न होकर अचेतक है से तात्पर्य वैसे मानसिक प्रक्रियाओं या मन के वैसे भाग से होता है जिससे व्यक्ति अवगत होता है जबकि अचेतर ये तात्पर्य वैसे मानसिक

प्रक्रियाओं या मन के भाग से होता है जिससे व्यक्ति अवगत नहीं होता है। इन दोनों के बीच भी एक मानसिक प्रक्रिया होती है जिसे अर्द्धचेतना (Subconscious) कहा जाता है। इससे तात्पर्य उन मानसिकः प्रक्रियाओं से होता है जिससे व्यक्ति वर्तमान में तो अवगत नहीं होता है लेकिन प्रयास करने के बाद उससे अवगत हो जाता है। दूसरे शब्दों में, प्रयास के बाद चेतना में आनेवाली मानसिक सामग्री को अद्धचंतन कहा जाता है। असामान्यता की व्याख्या करने के लिए फ्रायड ने निम्न प्रमुख संप्रत्यों का सहारा लिया है-

(a) उपातं, अहं, पराहं, **(Id. Ego. Super ego)**

(b) मनोलैंगिक विकास की अवस्थाएँ। **(Stages of psychoserual development)**

(c) चिंता, रक्षा प्रक्रम तथा अचेतन **(Anxety defencemechanism and unconscious)**

इन तीनों का वर्णन निम्नांकित है-

(a) उपाहं, अहं तथा पराहं (Id. Ego and Superego)

ये तीनों मन के गत्यात्मक पक्ष हैं। फ्रायड का मत है कि व्यक्ति का व्यवहार मन या व्यक्तित्व के इन्हों तीनों पहलुओं के आपसी अन्तः क्रिया (Interaction) का परिणाम होता है।

उपाहं (Id) व्यक्तित्व का जन्मजात उपतंत्र हैं जो आनन्द (Pleasure principle) के नियम द्वारा निर्देशित होता है। इसमें दो परस्पर विरोधी मूलप्रवृत्तियाँ पायी जातीं हैं- जीवन की मूल प्रवृत्ति (Life instinct) तथा मृत्यु मुलप्रवृत्ति (Death instinct), जीवन की मूलवृत्ति में संरचनात्मक प्रणोद (Constructive drive) होते हैं, इसे इरोस (Erose) भी कहा जाता है। इसका स्वरूप लैंगिक होता है तथा इसके उर्जा को लिबिडो कहा जाता है। मृत्यु की मूलप्रवृति में विध्वसात्मक प्रणोद (Desructive dirve) होते हैं इसके प्रभाव से व्यक्ति आक्रामक, बर्बादी, तोड़-फोड़ जैसे कार्यों को करता है। इसमें मृत्यु की ओर उन्मुखता पायी जाती है। उपाहं मात्र मानसिक प्रतिमाएँ (Mental image) तथा इच्छापूरक दिवास्वप्न (Wishfulfilling fantasies) उत्पन्न करता है ओर इसी के द्वारा मूलप्रवृतिक माँगों को पूरा करता है। इसे फ्रायड ने प्राथमिक प्रक्रिया (Primary process) कहा है।

अहं (ego), मन के गत्यात्मक पहलू का दूसरा भाषा है। इसका विकास जीवन के दूसरे छमाही (Six month) में ही उपाहं के आवेगों से होता है। यह मूलतः चेतन होता है। अहं अपने इच्छाओं की पूर्ति गौण प्रक्रियाओं द्वारा करता है अर्थात् यह वास्तविकता के माँग तथा उपाहं के तत्कालिक तुष्टि के बीचों बीच मध्यस्थता करते हुए निर्णय लेता है।

पराहं (Super ego) व्यक्तित्व का तीसरा महत्वपूर्ण उपतंत्र (Subsystem) है। इसे व्यक्तित्व का नैतिक कमांडर (Moral Commander) कहा जाता है, जो सामाजिक मूल्यों एवं नैतिकता के आलोक में सही तथा गलत का निर्णय लेता है। इस तरह से पराहं नैतिकता के नियम (Morality priciple) द्वारा निर्देशित होता है। जैसे-जैसे पराहं का विकास होता है, व्यक्ति में आन्तरिक नियंत्रण की शक्ति बढ़ते जाती है तथा व्यक्ति में उपाहं के अवांछित इच्छाओं से निबटने की क्षमता बढ़ते जाती है।

फ्रायड का यह मत है कि उपाहं, अहं तथा पराहं जब अलग-अलग लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अन्तःक्रिया करते है तो इससे व्यक्ति में आंतरिक संघर्ष (Inner conflict) उत्पन्न होता है जिसे अंतरामानसिक संघर्ष (Intrapsychic Conflict) कहा जाता है। अगर व्यक्ति अपने अन्तरामानासिक संघर्ष का समाधान करने में असफल रहता है तो इससे मानसिक विकृति उत्पन्न होती है।

(b) मनोलैंगिक विकास की अवस्थाएँ (Stages of psychosexual development)-फ्रायड ने व्यक्तित्व विकास के पाँच मनोलैंगिक अवस्थाओं का वर्णन किया है जिसके माध्यम से व्यक्तित्व का विकास होता है। प्रत्येक अवस्था की एक विशेषता यह है कि इसमें में लैंगिक सुख ग्रहण करने की एक विधि होती है। इन अवस्थाओं का वर्णन इस प्रकार है-

(1) मुखावस्था (Oral stage) यह अवस्था जन्म से लेकर दो वर्ष तक होती है। इसमें मुह प्रमुख कामुता क्षेत्र (Erogenous Zone) होता है और बच्चों में खाने और चुसने की क्रिया से सबसे अधिक संतुष्टि मिलती है।

(ii) गुदावस्था (Anal stage)-यह अवस्था दो से तीन साल तक की होती है। इस अवस्था में कामुकता क्षेत्र (Erogenous zone) मुँह से हटकर के शरीर के गुदा क्षेत्र (Anal region) में आ जाता है। परिणामस्वरूप बच्चे मल-मूत्र त्यागने से सम्बन्धित क्रियाओं से सुख प्राप्त करते हैं। इस अवस्था में दो तरह की गुदा क्रियाएँ (Anal activities) जैसे बहिष्कारक क्रियायें (Anal expulsive activities) तथा गुदा धानात्मक क्रियायें (Anal retentive activities) होती हैं।

(iii) लिंग प्रधानावस्था (Phallic stage)- मनोलैंगिक विकास का यह तीसरी अवस्था हे जो तीन से छः साल तक की होती है। इस अवस्था में एक नया कामुकता क्षेत्र (Erogeneous zone) का विकास होता है जिसे जननेंद्रियाँ (Genitals) कहा जाता है। इस अवस्था में बच्चें अपने जननेंद्रिय को छुने, मलने तथा खींचने में लैंगिक आनन्द प्राप्त करते हैं। इस अवस्था में लड़कों में मातृमनोग्रन्थि (Oedipus Complex) तथा लड़कियों में पितृमनोग्रन्थि (Electra Complex) विकसित होता है।

(iv) अप्रगटावस्था (Latency stage)-मनोलैंगिक विकास की यह चौथी अवस्था छः से बारह साल तक की होती है। चूँकि इस अवस्था में कोई नया कामुकता दहेज का विकास नहीं होता है, अतः इसे मनोलैंगिक विकास की अवस्था नहीं कहीं जा सकती है इस अवस्था में लैंगिक आवेगों में कमी आ जाती है क्योंकि बच्चे नये-नये कौशलों एवं अन्य क्रियाओं में अधिक रुचि लेना प्रारम्भ कर देते हैं। सच्चाई यह है कि इस अवस्था में बच्चे अपने लैंगिक इच्छाओं (Sexual wishes) को अनैतिक समझकर दमन कर देते हैं तथा अन्य बाहरी चीजों एवं घटनाओं में अधिक रुचि दिखाना प्रारम्भ कर देते हैं। दूसरे शब्दों में बच्चों के लिविडो (Libido) की अभिव्यक्ति (Expression) भिन्न-भिन्न प्रकार की अलैंगिक क्रियाओं के द्वारा होती है।

(v) जननेंद्रियावस्था (Genital stage) मनोलैंगिक विकास की पाँचवी एवं अन्तिम अवस्था है जो तेरह साल से लेकर आजीवन चलते रहता है। इस अवस्था में किशोरावस्था (Adolesence) तथा वयस्कावस्था (Adulthood) दोनों ही सम्मिलित होते हैं इस अवस्था में व्यक्ति को सर्वाधिक आनन्द या संतुष्टि विषमलिंगी सम्बन्ध (Heterosexual relations) से होता है।

प्रत्येक अवस्था व्यक्ति के समक्ष एक खास तरह के माँग रखता है जिससे व्यक्ति में मानसिक संघर्ष उत्पन्न होता है। अगर किसी कारण से यह मानसिक संघर्ष का समाधान नहीं हो पाता है तो उसमें आगे चलकर असामान्यता कि उत्पत्ति होती है।

(c) चिंता, रक्षाप्रक्रम एवं अचेतन फ्रायड के विचारधारा में असामान्यता में उत्पन्न करने वाले कारकों में चिंता का महत्वपूर्ण स्थान है। चिंता से तात्पर्य डर या आंशका (Apprehension) के सामान्यीकृत (Generelised feelings) से होता है। इन्होंने चिंता के तीन प्रकार बताये है-वस्तुनिष्ठ या वास्तविक चिंता (Objective reality anixety), स्नायुविकृत चिंता (Neurotic anixety) तथा नैतिक चिंता (Moral anxiety)। वास्तविक चिंता बाह्य वातावरण में उपस्थित वास्तविक खतरा या धमकी (Threats) से उत्पन्न होता है। स्नायुविकृत चिंता पराहं के आवेगों द्वारा अहं को दी गयी धमकी से उत्पन्न होता है तथा नैतिक चिंता व्यक्ति के कार्यों द्वारा पराहं को धक्का लगने से उत्पन्न होता है। चूँकि चिंता आनेवाला खतरा तथा दर्दनाक अनुभूतियों के प्रति एक तरह की चेतावनी

होता है, इसलिए व्यक्ति इससे छुटकारा पाने के लिए विशेष उपाय (Stategy) अपनाता है। प्रायः अहं कुछ तर्कसंगत उपायों के माध्यम से इन चिंताओं से अपने आपको बचा लेता है परन्तु ऐसा हमेशा सम्भव नहीं होता है और तब ऐसी हालत में कुछ अतर्कसंगत उपायों (Irrational measures) को अपना कर चिंता के दूर करता है। ऐसे अतर्कसंगत उपायोंको फ्रायड ने रक्षा प्रक्रम (Defence mechanism) कही है। ऐसे रक्षा प्रक्रम अचेतन स्तर पर कार्य करते हुए वास्तविकता को विकृत करके व्यक्ति में चिंता के स्तर को कम कर देता है।

दमन (represion), प्रक्षेपन, (Projection), विस्थापन (displacement), आदि कुछ ऐसे प्रमुख मनोचनाएँ हैं।

नया मनोगतिकी संदर्भ ***(Newer psychodynamic perspective***)-

असामान्य व्यवहार की व्याख्या में फ्रायड ने मूलतः उपाहं (id) की इच्छाओं एवं आवेगों तथा उनकी अभिव्यक्ति पर बल डाला है। परन्तु बाद में सिद्धान्तवादियों जिसमें सिंगमंड फ्रायड (Singmund Freud) की पुत्री अन्ना फ्रायड (Anna Freud) भी शामिल हैं, ने अहं (ego) को अधिक महत्वपूर्ण बताते हुए यह कहा है कि अहं द्वारा व्यक्तित्व के कार्यपालक (Executive) के रूप में कार्य करने के ढंग पर भी व्यक्ति में कुसमायेगी व्यवहार (Maladaptive behaviour) उत्पन्न होने की सम्भावना निर्भर करता है। आधुनिक नैदानिक मनेविलानियों एवं मनोचिकित्सकों द्वारा न तो उपाहं (id) और ना ही अहं (ego) पर बल डाला जाता है बल्कि वस्तु पर अधिक ध्यान दिया जाता है जिसके प्रति वह उपाहं एवं अहं को इच्छाओं एवं आवेगों को निर्देशित किया है और जिसे बच्चा अपने व्यक्तित्व में सम्मिलित कर लिया है। इस प्रक्रिया को इन्द्रप्रेजेक्सन (Introjection) कहा जाता है। इन्ट्रॉजेक्सन एक ऐसी आंतरिक प्रक्रिया होती है जिसके माध्यम से बच्चे स्मृति तथा प्रतिमाओं (Imgae) के सहारे सांकेतिक रूप से किसी व्यक्ति को किसी संवेग से मुक्त मानता है।

मनोगतिकी चिंतन में वस्तु सम्बंधी (Object-relations) पर आरम्भिक बल 19.30 वाले दशक में क्लिन (Klien), फेयरब्रेन (Fairbrain) तथा विन्कॉट्स (Winnicott) आदि द्वारा काफी डाला गया और कहा गया कि आंतरीकृत वस्तु (Intermalized objects) के परस्पर विरोधी गुण जैसे वस्तु या उदीपक आकर्षक या कुंठा उत्पन्न करने वाला हो सकता है जिससे वैमनस्य (Hostile) उत्पन्न हो सकता है। इतना ही नहीं, ऐसे वस्तु व्यक्तित्व के केन्द्रिय अहं से पृथक होकर स्वतंत्र अस्तित्व (Independent existence) भी बना ले सकते हैं। इन सबों का संयुक्त परिणाम यह होता है कि इससे व्यक्तित्व में आंतरिक संघर्ष (Inner Conflict) होता है और उसमें धीरे-धीरे कुसमायोजी व्यवहार (Maladaptive behaviour) उत्पन्न होने लगते हैं।

इस तरह यह स्पष्ट हुआ कि नये मनोगतिकी संदर्भ मूलतः व्यक्ति के अन्तवैयक्तिक सम्बंध (Interpersonal relationship) बल डालता है और इस बात की विशेष रूप से व्याख्या करता है कि किस तरह से ऐसे आरम्भिक सम्बंधों से व्यक्ति द्वारा संतोषजनक अंतक्रिया करने की क्षमता प्रभावित होती है।

वैश्लेषिक चिकित्सा **(Psychoanalytic therapy**)-

फ्रायड द्वारा प्रतिपादित मौलिक चिकित्सा पद्धति को मनोवैश्लेषिक चिकित्सा (Psychoanalytic therapy) कहा जाता है जिसमें बाद में बहुत सारे परिमार्जन किए गये। परन्तु उसके मूल तत्त्व से कोई छेड़-छाड़ नहीं की गयी। फ्रायड के क्लासिकी मनोवैश्लेषिक चिकित्सा की प्रमुख मान्यता यह है कि स्नायुविकृत चिंता (Neurotic anxiety) व्यक्ति में उस समय उत्पन्न होता है जब बचपन के दंडित एवं दमित उपाहं आवेग (Id impulsive) अपनी अभिव्यक्ति के लिए अहं को धमकी देता है। मनोवैश्लेषिक चिकित्सा में इस आरम्भिक दमन (early repression) को हटाने का प्रयास किया जाता है ताकि रोगी वाल्यावस्था के इस मानसिक संघर्ष को समझ सके और उसे वयस्क की वास्तविकता (Adult reality) के आलोक में दूर कर सके। इस दमन को हटाने के लिए कई तरह की प्रविधियों (Technique) का सहारा लिया जाता है जिसमें स्वतंत्र साहचर्य (Free association). स्वप्न विश्लेषण (Dream analysis) तथा रक्षा प्रक्रम (Defence mechanism) का विश्लेषण आदि महत्वपूर्ण हैं।

गत 40-50 वर्षों में न्योफ्रयडिअन (New Freudian) विशेषकर, करेन हार्नी, सुल्लीभान तथा अहं विश्लेषक (ego-analytic) खासकर इरिक्सन (Erikson) आदि के विचार मनोवैश्लेषिक चिकित्सा में मिश्रित हो गया है। इस नये मनोचिकित्सा पद्धति का सार तत्व यह है कि इससे एक ओर चिकित्सा अवधि को लघु तथा अधिक वर्तमान एवं भविष्य उन्मुखी बनाने की कोशिश की जाती है तो दूसरी तरफ उसमें अचेतन तथा रक्षा प्रक्रमों के महत्व को स्वीकार करते हुए स्वतंत्र साहचर्य (Free association) एवं स्वप्न विश्लेषण (Dream analysis) जैसे अधिक समय लेने वाले पद्धतियों को न करने की हिदायत दी गयी है। इस तरह का चिकित्सा फ्रायडियन की तुलना में अधिक सक्रिय तथा निर्देशात्मक होता है।

मनोगतिकी सिद्धान्त का प्रभाव (Impact of psychodynamic theory)

मनीगतिकी सिद्धान्त सबसे पहली बार यह दिखाने में समर्थ हुआ कि मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं में शुद्धता (disturbance) होने से मलेरिया बसेको बार होती हैं। जिस तरह से मेडिकल मॉडल ने असमान्य व्यवहार के कारण के रूप में प्रचलित अधिक विकृतियों को उत्पति जगह पर आगिक विकृति (Organic pathology) विशेषकर मस्तिष्कीय विकृति को प्रतिस्थापित किया था. ठीक उसी तरह से मनोगुतिको मॉडल ने मस्तिष्कीय विकृति को हटाकर उसके जगह अतिधित अहं प्रतिरक्षाओं (Exaggerated defence mechanism) को असामान्य व्यवहार के कारण के रूप में प्रतिस्थापित किया। मनोगतिकी सिद्धान्त ने असामान्य व्यवहार की उत्पत्ति तथा स्वरूप को कई दृष्टिकोण से प्रभावित किया है जिसका वर्णन इस प्रकार है।

(a) असामान्य व्यवहार में अचेतन प्रेरकों एवं अहं रक्षात्मक प्रक्रियायों (Ego defense process) की गत्यात्मक (Dynamic) भूमिका होती है। चेतन एवं अचेतन के बारे में जानने के लिए फ्रायड ने स्वतंत्र साहचर्य तथा स्वप्न विश्लेषण जैसी प्रविधियों का सहारा लिया था।

(b) मानव व्यवहार को विचलित करने में तथा मानसिक विकृति को उत्पन्न करने में दमित लैंगिक इच्छाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

(c) बाद के व्यक्तित्व समायोजन तथा कुसमायोजन में आरम्भिक वाल्यावस्था की अनुभूतियों का महत्वपूर्ण स्थान होता है अनुकूल अनुभूतियाँ जहाँ व्यक्तित्व में समायोजन विकसित करता है वही प्रतिकूल अनुभूतियाँ व्यक्तित्व में कुसमायोजन विकसित करता है।

(d) कुछ विशेष तरह के मानसिक विकृतियाँ उस समय विकसित हो जातीं हैं जब व्यक्ति अत्यंत कठिन समस्याओं का समाधान का प्रयास करता है और ऐसा प्रयास सामान्य अहं रक्षात्मक प्रक्रमों का मात्र एक अतिरजित प्रारूप होता है।

मॉडल के कुछ प्रमुख गुण तथा अवगुण भी है। इसके कुछ प्रमुख गुण **(Merits)** निम्नलिखित है-

(i) यह मॉडल सामान्य तथा असामान्य दोनों ही तरह के व्यवहार की व्याख्या एक ही तरह के मनोवैज्ञानिक नियमों के आधार पर करता है। जैसे चिंता, अचेतन, मानसिक संघर्ष तथा रक्षात्मक प्रक्रम आदि असामान्य के साथ ही साथ सामान्य व्यवहार की भी व्याख्या करता है।

(ii) यह मॉडल असामान्य व्यवहार की व्याख्या करने के साथ ही साथ व्यकित्व की भी एक विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत करता है। इन गुणों के अलावा मनोगतिकी सिद्धान्त के साथ कुछ कमजोरियाँ (Weaknesses) भी हैं जो इस प्रकार है।

(i) यह सिद्धान्त इतना जटिल एवं कठिन है कि न तो इसकी वैधता को साबित किया जा सकता है और ना ही इसे खंडित किया जा सकता है। इसका कारण यह है कि यहाँ मानव व्यवहार को एक से अधिक कारकों द्वारा तथा जरूरत से ज्यादा मनोवैज्ञानिक ऊर्जाओं (Psychic energy) द्वारा निर्धारित होते माना गया है।

(ii) मनोगतिकी सिद्धान्त के बहुत सारे संप्रत्यों एवं नियमों का प्रयोगात्मक सत्यापन आज तक नहीं हो पाया है।

(iii) इस सिद्धान्त में सामाजिक तथा परिस्थितिजन्य कारकों (Situational factors) जो मानव व्यवहार को गंभीर रूप से प्रभावित करता है, की उपेक्षा की गयी है।

(iv) मनोगतिकी सिद्धान्त में असामान्य व्यवहार को समझने के लिए व्यक्तिगत वर्द्धन (Personal growth) तथा मूल्य विकास (Value development) से सम्बद्ध उदीपकों की पर्याप्त उपेक्षा की गयी है।

(v) यौन प्रणोद (Sex-Drive) पर जरूरत से ज्यादा बल देना भी इस सिद्धान्त की एक प्रमुख कमजोरी माना जाता है।

उपरोक्त दोषों के बावजूद मनोगतिकी सिद्धान्त असामान्य व्यवहार को समझने तथा उसका उपचार करने में प्रमुख भूमिका निभा रहा है।